International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारतीय दर्शन में नैतिकता की भूमिका

डॉ कुमारी सुधा देवी

सहायक प्राध्यापक, टी. एस. कॉलेज, हिसुआ

Abstract

भारतीय दर्शन में नैतिकता को 'धर्म' के व्यापक रूप में देखा गया है, जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था, कर्म सिद्धांत, पुरुषार्थ और आत्म-साक्षात्कार से जुड़ी हुई है। यह पाश्चात्य नैतिकता से भिन्न है, क्योंकि यहाँ सत्य की खोज और निष्काम कर्म के माध्यम से सांसारिक उत्कर्ष के साथ मोक्ष को एकीकृत किया गया है। आस्तिक दर्शनों जैसे सांख्य, योग, मीमांसा, वेदांत में विवेक, यम-नियम, अद्वैत और अपूर्व जैसे आधार हैं, जबकि नास्तिक दर्शनों (जैन, बौद्ध) में अहिंसा-करुणा प्रधान है; चार्वाक अपवादस्वरूप भौतिक सुख को लक्ष्य मानता है। भगवद्गीता निष्काम कर्म का सर्वोत्तम उदाहरण प्रस्तुत करती है, और वर्णाश्रम तथा वसुधैव कुटुम्बकम् जैसे सिद्धांत सामाजिक-पर्यावरणीय नैतिकता को मजबूत करते हैं। यह नैतिकता आंतरिक दिव्यता को जागृत करने वाली साधना है।

भारतीय दर्शन के विशाल फलक में नैतिकता को केवल व्यवहार के नियमों की सूची के रूप में नहीं, बल्कि 'धर्म' के व्यापक और गहन अर्थ में समझा गया है। पाश्चात्य दर्शन के विपरीत, जहाँ नैतिकता अक्सर एक बौद्धिक प्रयास, सामाजिक अनुबंधों या उपयोगितावाद तक सीमित रहती है, भारतीय मनीषा ने इसे ब्रह्मांडीय व्यवस्था, आत्म-साक्षात्कार और मानवीय अस्तित्व के चरम लक्ष्यों के साथ एकीकृत किया है। भारतीय चिंतन परंपरा में नैतिकता का अर्थ 'सत्य की खोज' और 'सत्य के अनुसार जीवन जीने' की व्यावहारिक साधना है, जो व्यक्ति को सांसारिक उत्कर्ष और अंतिम वास्तविकता (मोक्ष या कैवल्य) की अनुभूति दोनों की ओर ले जाती है।

नैतिकता के तत्वमीमांसीय आधार भारतीय नैतिक दर्शन का एक अत्यंत मजबूत और गहरा तत्वमीमांसीय आधार है।

ऋत की अवधारणा: वैदिक साहित्य में नैतिकता की सबसे प्राचीन अवधारणा 'ऋत' है, जिसका अर्थ वह शाश्वत ब्रह्मांडीय व्यवस्था है जो सम्पूर्ण प्राकृतिक और मानवीय आचरण को नियंत्रित करती है। नैतिकता का मूल अर्थ इसी 'ऋत' के साथ तालमेल बिठाना है।

कर्म का सिद्धांत : भारतीय विचारक कर्म के सिद्धांत में दृढ़ विश्वास रखते हैं, जिसके अनुसार प्रत्येक क्रिया (अच्छी या बुरी) अपने विशेष परिणाम उत्पन्न करती है। यह सिद्धांत व्यक्ति को भाग्यवादी बनाने के बजाय उसे अपने भाग्य का सक्रिय निर्माता बनाता है, जो उसे स्वयं के प्रति जवाबदेह बनाकर एक न्यायपूर्ण समाज की आधारशिला रखता है।

पुरुषार्थ : भारतीय दर्शन ने जीवन को समग्रता में देखने के लिए 'पुरुषार्थ' (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) का ढांचा दिया है। अर्थ (भौतिक आवश्यकताएं) और काम (मनोवैज्ञानिक/शारीरिक आवश्यकताएं) को धर्म (नैतिकता) की सीमाओं के भीतर अनुभूत करने पर बल दिया गया है, ताकि अंतिम लक्ष्य 'मोक्ष' (आध्यात्मिक स्वतंत्रता) प्राप्त किया जा सके।

आस्तिक एवं नास्तिक दर्शनों में नैतिक दृष्टिकोण

सांख्य और योग दर्शन: सांख्य दर्शन में नैतिकता को 'विवेक-ख्याति' (प्रकृति और पुरुष के बीच भेद का ज्ञान) से जोड़ा गया है, जहाँ सत्व गुण (शुद्धता) को बढ़ाना और अज्ञान रूपी तमस को नियंत्रित करना ही नैतिकता है। योग दर्शन अष्टांग योग के अंतर्गत 'यम' (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) और 'नियम' के माध्यम से शारीरिक व मानसिक विक्षेपों को शांत करने के मनोवैज्ञानिक और नैतिक साधन प्रदान करता है।

मीमांसा दर्शन: पूर्व मीमांसा दर्शन नैतिकता को वेदों द्वारा निर्देशित 'कर्तव्य' (विधि और निषेध) के रूप में देखता है। इसमें 'अपूर्व' का क्रांतिकारी विचार है, जो यह मानता है कि किया गया कोई भी नैतिक कार्य एक अदृश्य शक्ति के रूप में आत्मा में संचित हो जाता है जो समय आने पर फल देता है।

वेदांत दर्शन: वेदांत में नैतिकता का अंतिम आधार 'अद्वैत' (अभेद) है। जब व्यक्ति यह अनुभव करता है कि 'तत्त्वमसि' (वह ब्रह्म तुम ही हो) और वही चेतना सभी जीवों में विद्यमान है, तो घृणा समाप्त हो जाती है और परोपकार आत्मा का सहज स्वभाव बन जाता है।

नास्तिक दर्शन (जैन और बौद्ध): यद्यपि ये वेदों को नहीं मानते, परंतु जैन और बौद्ध दर्शन में 'अहिंसा', 'प्रेम' और 'करुणा' को मानवीय नैतिकता के सर्वोच्च शिखर पर रखा गया है। जैन धर्म अहिंसा का अत्यंत सूक्ष्म विज्ञान प्रस्तुत करता है।

चार्वाक दर्शन (अपवाद): चार्वाक स्कूल भारतीय दर्शन का एकमात्र ऐसा स्कूल है जो स्पष्ट रूप से नास्तिकता और भौतिकवादी-सुखवादी नैतिकता का समर्थन करता है। वे धर्म और मोक्ष को अस्वीकार कर केवल शारीरिक सुख (काम) को जीवन का अंतिम लक्ष्य मानते हैं।

भगवद गीता: नैतिक द्वंद्व और निष्काम कर्म भगवद गीता को भारतीय नैतिकता का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ माना जाता है क्योंकि यह शांत आश्रम की बजाय 'धर्मक्षेत्र' (युद्ध के मैदान) में कर्तव्यों के टकराव के बीच उत्पन्न हुई। श्री कृष्ण अर्जुन की दुविधा का समाधान 'निष्काम कर्म' के माध्यम से करते हैं। इसका

अर्थ है–अपने कर्तव्यों और कार्यों को पूरी कुशलता से करना, परंतु उसके फलों के प्रति मानसिक आसक्ति का त्याग कर देना। गीता की नैतिकता न तो अत्यधिक भोगवादी है और न ही तपस्वी, बल्कि यह एक संतुलित व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देती है।

सामाजिक और पर्यावरणीय नैतिकता

वर्णाश्रम धर्म: व्यक्तिगत नैतिकता को सामाजिक संरचना के साथ जोड़ने के लिए भारतीय दर्शन ने 'वर्णाश्रम धर्म' का ढांचा दिया, जो मूलतः जन्म पर नहीं बल्कि 'गुण' और 'कर्म' (योग्यता) पर आधारित था, ताकि समाज में संतुलन बना रहे।

पारिस्थितिक और वैश्विक नैतिकता: भारतीय दर्शन की नैतिकता केवल मानव समाज तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका विस्तार सभी संवेदनशील प्राणियों, पौधों और पर्यावरण तक है। 'पंचमहाभूत' (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश) के सिद्धांत के अनुसार, मनुष्य और पर्यावरण दोनों एक ही तत्व से निर्मित हैं, इसलिए प्रकृति के प्रति सम्मान एक नैतिक कर्तव्य है। 'वसुधैव कुटुंबकम' का सिद्धांत आधुनिक विश्व को सह-अस्तित्व और वैश्विक शांति का आधार प्रदान करता है।

निष्कर्ष

भारतीय दर्शन में नैतिकता कोई बाहरी दबाव या थोपी हुई वस्तु नहीं है, बल्कि यह वह आंतरिक प्रकाश है जो मनुष्य के भीतर सोई हुई दिव्यता को जाग्रत करता है। यह सिद्ध करता है कि एक सार्थक जीवन केवल भौतिक रूप से 'होने' में नहीं, बल्कि 'नैतिक रूप से जीने' में है।

संदर्भ

1. मूल ग्रंथ एवं भाष्य

आचार्य शंकर (शंकराचार्य): श्रीमद्भगवद्गीता भाष्य सहित, गीता प्रेस, गोरखपुर। (भगवद गीता के निष्काम कर्म और नैतिक दर्शन के गहन अध्ययन हेतु)।

उपनिषद संग्रह: संपादक: स्वामी माधवानन्द, अद्वैत आश्रम, कोलकाता। (उपनिषदों में निहित तत्वमीमांसीय और नैतिक आधारों के लिए)।

2. भारतीय दर्शन के सामान्य इतिहास एवं सिद्धांत

राधाकृष्णन, डॉ. एस.: भारतीय दर्शन, खंड 1 एवं 2, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। (वैदिक साहित्य, उपनिषद, और भारतीय आस्तिक-नास्तिक दर्शनों में नैतिक मूल्यों के विस्तृत विश्लेषण के लिए)।

दासगुप्त, सुरेन्द्रनाथ : भारतीय दर्शन का इतिहास, भाग 1-5, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन। (कर्म सिद्धांत और 'ऋत' की अवधारणा की ऐतिहासिक विवेचना हेतु)।

शर्मा, चन्द्रधर : भारतीय दर्शन: एक परिचय, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली। (भारतीय आस्तिक और नास्तिक दर्शनों की समीक्षात्मक जानकारी के लिए)।

चटर्जी, सतीशचन्द्र एवं दत्त, धीरेन्द्रमोहन : भारतीय दर्शन का परिचय। (कर्मवाद, पुनर्जन्म और विभिन्न दर्शनों में नैतिकता के तुलनात्मक अध्ययन के लिए)।

3. विशिष्ट दर्शन एवं नैतिकता

जैन, जगदीशचन्द्र: जैन दर्शन और संस्कृति, भारतीय विद्या भवन, मुंबई। (जैन दर्शन में 'अहिंसा', कर्म पुद्गल और आचार मीमांसा के अध्ययन हेतु)।

मुनि, श्रीनिवास: बौद्ध दर्शन और उसका विकास, नालंदा पुस्तकालय, नालंदा। (बौद्ध दर्शन के चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग और करुणा के सिद्धांत के लिए)।

तिवारी, के. एन. : क्लासिकल इंडियन एथिकल थॉट, मोतीलाल बनारसीदास। (चार्वाक सहित विभिन्न भारतीय दर्शनों में नैतिक विचारों और 'धर्म' की अवधारणा के लिए)।

पाठक, कृष्ण मणि : "निष्काम कर्म एंड द कैटेगोरिकल इम्पेरेटिव: अ फिलॉसॉफिकल रिफ्लेक्शन ऑन द भगवद-गीता"। (भगवद गीता के निष्काम कर्म और कांट के नैतिक सिद्धांतों के तुलनात्मक अध्ययन के लिए)।